आत्मा से परमात्मा कैसे बने?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा और परमात्मा दोनों का स्वरूप भिन्न–भिन्न है। आत्मा बंधन के कारण जीव कहलाती है। जब आत्मा कर्मरज से मुक्त होता है तो वह परमात्मा बन जाता है। परमात्मा अशरीरी है। जन्म मरण के चक्र से परमात्मा मुक्त होता है। आत्मा कर्म बंधन में बंधा होने के कारण संसारी कहलाता है। सभी आस्तिक दर्शन किसी न किसी रूप में ईश्वर, आत्मा एवं परमात्मा के अस्तित्त्व में विश्वास करते हैं, क्योंकि आत्मा के अस्तित्त्व को माने बिना कर्म और पुनर्जन्म की व्याख्या ही नहीं की जा सकती। आत्मा ही एक ऐसा शाश्वत तत्त्व है जिसके आधार पर मानव अपने अस्तित्त्व को सिद्ध करता है। आत्मा जिस शरीर को ग्रहण करता है, उस समय उससे संयुक्त होकर वैसा ही बन जाता है। जो जीवात्मा आज स्त्री है, वही दूसरे जन्म में पुरुष हो सकता है, जो पुरुष है, वही स्त्री हो सकता है। भाव यह है कि स्त्री, पुरुष और नपुंसक आदि भेद शरीर को लेकर हैं, जीवात्मा को लेकर नहीं। जीवात्मा सर्वभेदशून्य और सारी उपाधियों से रहित है।

आत्मा दो प्रकार की है, एक जीवात्मा दूसरी परमात्मा। परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ है, और एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न–भिन्न व्यापक और नित्य है। परमतत्त्व अंतिम तत्त्व है, सर्वाधार है, सभी वस्तुओं का मूलस्थान है। उसी को मूलतत्त्व कहा जा सकता है, जिससे इस जगत् की उत्पत्ति हुयी है, जो सभी वस्तुओं की सत्ता का आधार है और जिसमें अन्ततः इन सभी वस्तुओं का लय हो जाता है। जगत् का आदि और अन्त ईश्वर को माना गया है। अतः ईश्वर ही परमतत्त्व है। इसे ही परमात्मतत्त्व भी कहते हैं। ब्रह्म के दो रूप माने गये हैं– मूर्त्त और अमूर्त्त, मर्त्य और अमृत, स्थित और चर तथा सत् और त्यत्। ब्रह्म के विषय में सविशेष श्रुतियां और निर्विशेष श्रुतियां दोनों उपलब्ध हैं।

सगुण ब्रह्म को अपर ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म को पर ब्रह्म कहा गया है। अपर ब्रह्म की संज्ञा ईश्वर भी है जो समस्त विश्व का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता और नियन्ता है। यह सर्वज्ञ और सर्व अन्तर्यामी है। यह सम्पूर्ण जगत् का कारण है, क्योंकि सभी प्राणियों की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का स्थान यह है। सगुण ब्रह्म का स्वरूप लक्षण है– 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' और विज्ञानमानन्दं ब्रह्म। ब्रह्मपरम सत्य है, विशुद्ध ज्ञान है, अनन्त है, अखण्ड आनन्द है। यह ब्रह्म का स्वरूप है। ब्रह्म सत् चित् आनन्द है, शान्त और शिव है। यही परमात्मतत्व है। ब्रह्म का निर्गुण रूप भी प्राप्त होता है। निर्गुण ब्रह्म के निर्वचन में निषेधात्मक पदों का प्रयोग किया गया है। निर्गुण होने से ब्रह्म सभी सांसारिक धर्मों से परे है। अतः लौकिक विशेषणों का प्रयोग ब्रह्म के लिये नहीं किया जा सकता। अतीन्द्रिय, निर्विकल्प, निरुपाधि और अनिर्वचनीय ब्रह्म, इन्द्रिय, बुद्धि विकल्प और वाणी द्वारा ग्राह्य नहीं है।

ईश्वर को जगत् की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय का कारण कहा गया है। वे समस्त देवों तथा लोकों के उत्पत्ति स्थान हैं। स्थूल, सूक्ष्म, अव्यक्त, दो पैरों वाले और चार पैरों वाले सम्पूर्ण जीव समुदाय उन्हीं की कृपा पर आश्रित हैं। वे ही परमेश्वर स्थितिकाल में समस्त ब्रह्माण्डों की रक्षा करते हैं तथा वे ही सम्पूर्ण जगत् के अधिपति और समस्त प्राणियों में अन्तर्यामी रूप से छिपे हुए हैं। ईश्वर को विश्वकर्मा, महात्मा लोगों के हृदय में निवास करने वाला, बुद्धि और मन से ध्यान में लाया हुआ तथा रहस्य को जानने वाला कहा गया है। इस प्रकार विश्व स्रष्टा के रूप में ब्रह्म का वर्णन किया गया है। आत्मा को अमर, नित्य तथा अपरिणामी कहा गया है। आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है, यह न ही किसी अन्य कारण से ही उत्पन्न हुआ है और न स्वतः ही कुछ अर्थान्तररूप से बना है।

गीता भी इसी बात को कहती है कि जो इस आत्मा को मारनेवाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते, क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है। आत्मा की अनुभूति कैसे करें यह एक प्रश्न है। आत्मा की अनुभूति अनुभव जन्य है। श्रमण परम्परा में केवलज्ञान हो जाने के बाद जीव ईश्वर बन जाता है। आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थिर हो जाता है। यह अवस्था परम आनन्द की अवस्था है। इस अवस्था में आत्मा पर कर्मों का आवरण नहीं रहता है। इस अवस्था में

आत्मा परमात्मा बन जाता है। परमात्मा सिद्धशिला में विराजमान होता है। सभी जीवों में परमात्मा बनने की शक्ति निहित है। पुरुषार्थ के द्वारा आत्मा परमात्मा बन सकता है। सभी जीव पृथक–पृथक है और अपने कर्म के अनुसार सभी को मोक्ष मिलता है।

आत्मा अपने शुद्ध रूप में आनन्दमय है। जब मनुष्य सुषुप्तावस्था में रहता है तब शरीर इन्द्रिय विषय तथा मन से अपना सम्बन्ध भूल जाता है और अपने प्रकृत रूप में आकर सुख–दुःख से परे शान्त अवस्था को प्राप्त हो जाता है। दैनिक जीवन में जो थोड़ी सी सुखानुभूति होती है, वह अत्यल्प और दुःख से मिश्रित होने पर भी हमारे जीवित रहने की इच्छा को बनाये रखता है। आत्मा या ब्रह्म के साथ अपनी एकता देखते हैं, उतना ही अधिक हम परमानन्द प्राप्त करते हैं। आत्मा का दर्शन करना अनन्त, अमृत, आनन्दमय ब्रह्म में मिल जाना है। यही परमानन्द है। इसे प्राप्त कर लेने पर कुछ भी अप्राप्त नहीं रहता। किसी वस्तु की कामना शेष नहीं रहती। जब मनुष्य का हृदय वासना रहित या निष्काम हो जाता है तब वह इसी जीवन में अमरत्व को प्राप्त कर लेता है।